चाँद कैसे दूँ?

ज़ेन साधक रियोकान के बारे में कई कहानियाँ हैं। उनकी कुटिया में एक बार हुई चोरी को लेकर हम यहाँ दो किस्से दे रहे हैं:

ज़ेन साधक रियोकान, पहाड़ी के नीचे बनी अपनी छोटी-सी कुटिया में रहते थे। एक रात एक चोर उनके घर में घुसा। लेकिन घर में चुराने लायक तो कुछ था नहीं। तभी रियोकान आ गए। चोर ने भागने की कोशिश की लेकिन रियोकान ने उसे पकड़ लिया। बोले, "आप मेरी कुटिया में मेहमान हैं। आप खाली हाथ कैसे जा सकते हैं? लीजिए, मेरे कपड़े ले जाइए। और तो कुछ मेरे पास है नहीं।"

अचरज में डूबा चोर उनके कपड़े लेकर भाग गया। नग्न अवस्था में रियोकान शीतल चाँदनी में बैठे चाँद को ताक रहे थे। "यह सुन्दरता कितनी कीमती है। काश, मैं उस बेचारे को यह चाँद दे सकता।"

एक बार जब रियोकान आश्रम में अपनी कुटिया में पहुँचे तो उन्होंने पाया कि कोई चोर उनकी कुटिया में रखी प्रार्थना की चटाई और भिक्षा का कटोरा चुराकर चला गया है। अब उनकी कुटिया एकदम खाली थी, लेकिन खिड़की में चाँद चमक रहा था। उन्होंने तुरन्त यह हाइकू (कविता) कही:

यहीं छोड़ गया
चोर
खिड़की में चमकता हुआ चाँद। चकमक

साभार: वाग्देवी प्रकाशन, अनुवाद: संजीव मिश्र

कार्टून: राजेन्द्र धोड़पकर

मैं कह नहीं सकता
क्या चीज़ क्या है
चमकते हुए आलूचे के फूल/वसन्त का चाँद ही तो है

(जापानी कवि इज़मी शिकिबू (974-1034) की एक कविता)